भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक : 5-5-2018

पुलिस, अर्धसैनिक और कमांडो बलों द्वारा जारी जनसंहारों की निंदा करें! ताड़पाल, कसनूर और आयपेंटा शहीदों के अरमानों को पूरा करन के लिए अंतिम सांस तक प्रयास करें! भारत की जनवादी क्रांतिकारी आंदोलन की रक्षा करें, उसे मजबूत करें, आगे बढ़ाएं!

प्रिय जनता,

10 मार्च 2018 से 27 अप्रैल तक दण्डकारण्य में पुलिस, अर्धसैनिक और कमांडो बलों द्वारा अंजाम दिए गए तीन जनसंहारों में 58 क्रांतिकारियों ने अपनी जान की कुरबानी दी। बीजापुर जिले के पूजारी कांकेर के नजदीक ताड़पाल जंगलों में 10 कामरेड्स (7 महिला और 3 पुरुष) को, उसी जिले के हल्बी तुमिरिगुण्डा जंगल में इंद्रावती नदी के किनारे गढ़चिरोली के सी-60 कमांडो बलों द्वारा 40 क्रांतिकारियों और ग्रामीणों (22 महिला और 18 पुरुष) की जनसंहार की गयी थी। यह जघन्य कार्रवाई को सी-60 कमांडो बलों द्वारा अंजाम दिए जाने के वजह से नदी के उस पार के कसनूर गांव के हत्याकाण्ड के रूप में जाना गया। इसके तुरंत बाद उसी बीजापुर जिले के इलिमेड के पास आयपेंटा पहाड़ों में 8 क्रांतिकारियों (6 महिला और 2 पुरुष) को गोली मार दी गयी। इन तीनों भारी मुठभेड़ों में 35 महिला और 23 पुरुष कामरेडों की हत्या की गयी। सी-60 कमाण्डों के गोलीबारी में घायल होकर उनके कब्जे में गये 11 कामरेडों में से 6 को उनके अधिकारी एएसपी महेश्वर रेड्डी द्वारा खांदला राजाराम जंगलों में गोली मार दी गयी। कसनूर घटना में 24 कामरेड्स को पानी में डूब कर अपनी जान गवांनी पड़ी। इन सभियो की स्मृति में हमारी केन्द्रीय कमेटी विनम्रता से सिर झुकाकर क्रांतिकारी जोहार अर्पित करती है। इसके साथ-साथ देश के अन्य क्रांतिकारी इलाकों (बिहार-झारखण्ड, महाराष्ट्र, ओड़िशा और छत्तीसगढ़) में पिछले चार महीनों में हुए मुठभेड़ों और फर्जी मुठभेड़ों में दसियों संख्या में क्रांतिकारियों, क्रांतिकारी जनता और क्रांतिकारी संगठनों के कार्यकर्ताओं को पुलिस द्वारा हत्या की गयी। क्रांति को सफल बनाने के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले हर एक कामरेड को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए, उनके अरमानों को पूरा करने के लिए अंत तक लड़ने की भा.क.पा. (माओवादी) और एक बार शपथ लेती है।

केन्द्र में भाजपा के नेतृत्व में एन.डी.ए. सरकार सत्ता में आने के चार वर्षों से माओवादी आंदोलन जारी रहनेवाली सभी राज्यों में पुलिस और अर्धसैनिक बलों को बड़े पैमाने पर तैनात कर विगत 8 सालों से जारी ग्रीन हंट के बाद, अभी 'समाधान' रणनीति के साथ बहुत ही आक्रामक रूप से पाशविक हमले कर रही है। सैकड़ो आम जनता की, दशियों संख्या में क्रांतिकारियों की हत्या की गयी है। इसके बावजूद, क्रांतिकारी आंदोलन न सिर्फ जारी रहा है, बल्कि अन्य इलाकों में विस्तार हो रहा है। इसे देखकर हर साल विशेष मिशन तैयार करते हुए आधुनिक हथियारों से लैस होकर सैनिक हमले तेज कर रही है। हेलिकॉप्टरों को व्यापक रूप से इस्तेमाल करते हुए विभिन्न तरीकों से हवाई हमले कर रही है। भारतीय वायुसेना और केन्द्रीय पुलिस बल, तेलंगाना और छत्तीसगढ़ के कमांडो बल मिलकर तेलंगाना और छत्तीसगढ़ के सीमा पर ताड़पाल में अंजाम दिया गया हमला ही इसका सबूत है। मानवरहित टोही विमानों को बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करते हुए हमले कर रहे हैं। समूचे जंगल इलाके में भी मोबाइल नेटवर्क मजबूत कर रहे हैं। इससे आगे चलकर गांवों में बेरोजगार लंपट युवाओं को, आंदोलन में जनता के हाथों सजा भुगतने वाले परिवारों के सदस्यों को, पुलिस परिवारों को और कबिलायी दबंग नेताओं को इकट्ठा कर पैसा और नौकरी का लालच दिखाकर, उनकी सुरक्षा के लिए पूरा भरोसा दिलाकर उन्हें मुखबिर बना रहे हैं। मुख्य रूप से उनके सूचनाओं पर निर्भर होकर हमले करते हुए पुलिस भारी हत्याकांडों को अंजाम दे रही है।

मई 2017 में केन्द्र सरकार द्वारा दिल्ली में माओवादी इलाकों के पुलिस, सैनिक, नागरिक और न्याय विभागों के उच्च अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक में क्रांतिकारी आंदोलन के उन्मूलन के लिए 'समाधान' रणनीति तय की गयी थी। 2022 तक भारत को माओवादीरहित देश के रूप में तब्दील करने की समयसीमा रखी गयी थी। राज्य सरकारें, विशेषकर छत्तीसगढ़ के भा.ज.पा. सरकार 2019 के अंदर ही माओवादियों के उन्मूलन के लिए जल्दबाजी कर रही है। महाराष्ट्र की भा.ज.पा.

सरकार भी इसी होड़ में लगी हुई है। इसके लिए केन्द्र ने विभिन्न राज्यों को न सिर्फ जरूरी पैसे दे रहा है, बल्कि उनके द्वारा प्रस्तावित अर्धसैनिक बलों को भी उपलब्ध करा रहा है। राज्य सरकारें और कोई दूसरी रोजगार दे पाने में असमर्थ होकर, बेरोजगार युवाओं को सशस्त्र बलों में भर्ती कराकर, उन्हें कमांडो प्रशिक्षण दे रही हैं और बलों में काफी इजाफा कर रही हैं। फलतः माओवादी आंदोलन के इलाके पुलिस के लोहे के जूतों तले पिस रहे हैं, जनता की जिंदगियां न सिर्फ अस्तव्यस्त हो रही हैं, बल्कि खाकी वर्दीधारियों की यातनाएं बर्दास्त करना मुश्किल हो रहा है। रोज गांवों पर कमांडो बलों के हमले हो रहे हैं। गश्त के नाम पर विशेष बलों के गोलीबारी में जंगलें गूंज रहे हैं। इन गोलीबारियों में रोजीरोटी के लिए जंगल में जाने वाले आदिवासियों की हत्या की जा रही है। महिलाओं पर अत्याचार किया जा रहा है। उनके थोड़े से संपत्ति को भी नष्ट करना आम बात हो गया है। इसी बीच गढ़चिरोली जिले में 5 फरवरी को खनन इलाके में आनेवाले कोयनवरसे गांव के जंगल में गुलेर खेलने गये उरांव युवक रामकुमार की सी-60 कमाडो द्वारा निर्मम हत्या की गयी। इसी जिले के चिनावेडमपल्ली गांव के जंगल में शिकार करने गये आदिवासी किसान सोनसाई (35) सी-60 कमाडों के जाल फंस कर जिन्दा जल गये। इस तरह की घटनाएं आदिवासी जीवन में पिछले एक दशक से आम बात हो गया है। इन पाशविक हमलों की निंदा करते हुए, इन हमलों का प्रतिरोध करते हुए क्रांतिकारी आंदोलन के पक्ष में पूरी तरह खड़े होकर उसका बचाव करने हमारी पार्टी जनता को अपील करती है।

आंदोलन के इलाकों पर बढ़ते हमलों, हत्यकाण्डों, जेलों में बंदी साथियों को दी जाने वाली कठिन और लम्बी सजाओं तथा विश्वभर में तीखी होती जा रही आर्थिक संकट के बीच अविभाज्य संबंध है। देश और दुनिया में जारी संकट से उबरने के लिए शोषक-शासक वर्गों ने देश के प्राकृतिक संसाधनों को बड़े पैमाने पर लूटने की जल्दबाजी में हैं। केन्द्र और सभी राज्य सरकारें एक-दूसरे से होड़ लगाते हुए देश के संसाधनों को बेचने के लिए देश-विदेशों में कम समय में कई बार भ्रमण कर रहे हैं। विभिन्न पूंजीवादी, साम्राज्यवादी सरकारों के साथ, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ दशियों संख्या में समझौतें कर रहे हैं। उन्हें वादे पर वादे करते हुए तुरंत परिणाम हासिल करने के लिए बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने पर व्यस्त हैं। बुनियादी ढांचा के परियोजनाओं को पूरा करने के लिए पुलिस बल को इस्तेमाल करते हुए जनता पर हमले तेज कर रहे हैं। देवेन्द्र फड्नवीस के मुख्यमंत्री बनने के बाद गढ़चिरोली जिले में सिर्फ सुर्जागढ़ खदानों के खनन के लिए ही आसपास के गांवों और जंगलों को 6 विशेष अर्धसैनिक शिविरों के घेरे में लाया गया है। हफ्ते में एक बार 400 गाड़ियों से पुलिस की पूरी सुरक्षा के साथ कच्चेमाल को लायेड के लिए ले जाया जा रहा है। बस्तर सम्भाग के सभी खनन इलाके पिछले 15 वर्षों के रमनसिंह के शासन में टाटा, जिंदल, एस्सार सहित दर्जनों कार्पोरेट घरानों को बेची गयी हैं। ये जनता के लिए जीवन-मरण की समस्या बन चुकी है। इसके कारण वे अनन्य बलिदानों के लिए तैयार होकर प्रतिरोध कर रहे हैं। वे अपनी जीवन के लिए सरकारों के नीतियों और पुलिस के बंदूकों को रोकना उनके लिए अनिवार्य बन गयी है।

आदिवासी इलाकों में पेसा और ग्रामसभा का नामो-निशान मिटा रहे हैं। दूसरी तरफ ''विकास... विकास...'' की मीठी-मीठी बातें करते हुए जनता के अंदर भ्रम फैला रहे हैं। इसमें मोदी और रमनसिंह, देवेन्द्र फड्नवीस, रघुवरदास, चंद्रबाबु नायडु, पिनारायी विजयन, नवीन पटनायक और चंद्रशेखरराव आगे हैं। देश में आसमान छूते दैनिक जरूरत के चीजों की कीमतें, तेजी से बढ़ती बेरोजगारी, किसानों की आत्महत्याएं, भुखमरी, अत्याचार, भ्रष्टाचार के घोटाले - ऐसे बहुत सी समस्याएं मौजूद होने के बावजूद शासकों को परवाह नहीं है। वे जनता के कल्याण के लिए नहीं, बल्कि सिर्फ शोषक वर्गों और संपन्न परिवारों के विकास पर ही ध्यान देते हैं। शोषक-शासक वर्ग अपने द्वारा लिखित सभी कानूनों को तोड़कर नागरिक और जनवादी अधिकारों का हनन कर रहे हैं। संघर्षरत जनता के हितैषी होने पर जनवादी-प्रेमियों, बुद्धिजीवियों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं, आदिवासी हितैषों को सफेदपोश/शहरी माओवादी कहकर बेहद परेशान कर रहे हैं। गिरफ्तार कर रहे हैं। झूठे मामले लगाकर लम्बी सजाएं देकर सलाखों के पीछे ठूंस रहे हैं। कामरेड्स साईबाबा, प्रशांत राही, हेम मिश्र, पांडू नरोटी, महेश तिरकी और विजय तिरकी की सजा इसका उदाहरण हैं। इसी बीच में महाराष्ट्र के कुछ सरकारी बुद्धिजीवियों ने नागपुर के प्रमुख वकील सुरेन्द्र गडलिंग, कबीर कला मंच के महिला कलाकार हर्षाली, दलित नेता सुधीर धावले पर भीमा कोरेगांव के साजिशकर्ता का मोहर लगाया है। इसके बाद पुलिस उनके घरों पर छापामारी कर उनके इलेक्ट्रानिक सामग्री को उठाकर ले गये। इसके बहाने उन्हें कभी भी सलाखों के पीछे ठूंसने के लिए पुलिस अपनी खेल खेल रही हैं। इन कार्रवाइयों की हमारी पार्टी घोर निंदा करती है।

इन जीवन-मरण समस्याओं से लोग एक तरफ जूझ रहे हैं, दूसरी तरफ देश में हिन्दूत्व शक्तियों के हमले बढ़ रहे हैं। विगत चार सालों में सैकड़ों की संख्या में हिन्दूत्व हमले हुए हैं, जिसमें कई मुसलमान, दलित और आदिवासी जनता को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है तथा उनकी संपत्ति नष्ट हुई है। समाज के सभी तबकों के लोग हिन्दूत्व के चपेट में आ रहे हैं। इसके बावजूद, शासकों ने उनके समस्याओं का निपटरा नहीं किया, उन्हें सिर्फ जनता की वोट की परवाह है।

प्रिय जनता!

नक्सलबाड़ी की लपटे दावालन बनकर देशभर में विस्तारित हो चुकी है। इसे शोषक-शासक वर्ग बर्दास्त नहीं कर पा रहे हैं। खासकर देश में माओवादी आंदोलन को सत्तारूढ़ भगवा आतंकी सहन नहीं कर पा रहे हैं। पिछले सरकारों से आगे बढ़कर वे बेहद आक्रामक रूप से अपनी रणनीति अमल कर रहे हैं। इसके बावजूद, देश में बढ़ती जनजागरूकता, जन आंदोलनों और जनवादी आंदोलनों के साथ क्रांतिकारी आंदोलन इन शोषकों के लूट के खेल उनके मर्जी से खेलने नहीं दे रहे हैं। लोग पहले

के मुकाबले बहुत ज्यादा जुझारू रूप से लड़ रहे हैं। जनमुक्ति छापामार सेना जनता के साथ खड़ी है और दृढ़ता व समर्पण के साथ लड़ रही है। शोषक-शासक वर्गों के सभी जनविरोधी नीतियों का हमारे पार्टी समय-समय पर भण्डाफोड़ करते हुए जनता को गोलबंद कर आंदोलन कर रही है। खास तौर पर क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में जनता अपने वैकल्पिक सरकारों का गठन करते हुए देश में नवजनवादी व्यवस्था के निर्माण के लिए आत्मबलिदान की चेतना और हिम्मत के साथ लड़ रही हैं। फलतः सलवा जुडूम, सेंद्रा और हर्मद वाहिनी का ध्वस्त हुए थे। उसके बाद 2009 से ऑपरेशन ग्रीन हंट के रणनीति के साथ यूपीए सरकार द्वारा जनता पर युद्ध छिड़ी गयी थी। लेकिन उसे भी 24 अप्रैल 2017 के बुरकापाल हमले के बाद हार का सामना कर दुम दबाकर भागना पड़ा। फौरन केन्द्रीय गृहमंत्री ने अपनी हार को दबी जुबान से स्वीकार कर लिया और बड़ी-बड़ी बाते करते हुए, रणनीति बदलने का दावा कर 'समाधान' रणनीति को सामने लाये। पिछले 50 वर्षों से भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में जनता अविराम संघर्ष करते हुए दुश्मन के कई रणनीति को नाकाम कर जनयुद्ध के जरिए कई अनुभव हासिल कर रही हैं। हमारी पार्टी जनता को आह्वान करती है कि अब वे इन अनुभवों को सामने रखकर इस नयी 'समाधान' रणनीति को मुकाबला करें। उच्चस्तर पर हो रहे दुश्मन के हमलों को उच्च चेतना के साथ हराने में अक्षम हो जाने से पिछले पांच दशकों के जनयुद्ध के सफलताओं को बचा नहीं पाएंगे। इसलिए यह समय है कि और सूझबूझ, दृढ़ता और गलतियों के लिए मौका नहीं देकर, दुश्मन को गहराई से अध्ययन कर, कार्यनीतिक जवाबी हमलों के साथ सक्रिय आत्मरक्षात्मक युद्ध को साहसिक रूप से आगे ले जाएं। इसके लिए अमर शहीदों के अनुभवों से सीख लेते हुए उनके अरमानों और आदर्शों को लेकर संघर्ष करें।

जनवादीप्रेमियों, पत्रकारों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं और छात्र-नवजवानों,

अक्टूबर 2016 में ओड़िशा के रामगुड़ा में 31 कामरेडों को आंध्रप्रदेश ग्रेहाउण्ड्स पुलिस द्वारा हत्या किये जाने के खिलाफ आप सभी लोगों ने युद्ध-स्तर पर गोलबंद होकर तथ्यों को दुनिया के सामने लाये थे। आज उससे भी बड़े हत्याकांण्ड हो रहे हैं। हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) का आह्वान है कि इनपर आप फौरन तथ्यों का जांच-पड़ताल करने और दोषियों को सजा दिलाने के लिए न्यायपूर्ण संघर्ष में आगे आएं। आप लोगों पर भी फासीवादी हमले हो रहे हैं। आप भी गिरफ्तारियों का शिकार हो रहे हैं और जमानत से वंचित रखकर आप को भी लम्बे समय तक सलाकों के पीछे रख रहे हैं। आप लोगों पर भी हमले कर हत्याएं कर रहे हैं। इसके बावजूद, आप लोगों पर हमारी पार्टी का पूरा विश्वास है कि आप लोग हिम्मत कर जनता और जन आंदोलनों के साथ दृढ़ता से खड़े रहेगें। जनता में आतंक फैलाने के मकसद से संचालित सलवा जुडूम, सेन्द्रा और हर्मद वाहिनी का भण्डाफोड़ कर हराने में आप की भूमिका प्रशंसनीय है। उसके बाद संचालित ऑपरेशन ग्रीन हंट का भण्डाफोड़ करने में और उसे दुम दबाकर भागने पर मजबूर करने के लिए आप ने साहसिक रूप से संघर्ष किए थे। भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में बढ़ती आप की जिम्मेदारियों के परिप्रेक्ष्य में आप के प्रयास के लिए हमारी पार्टी अभिनन्दन पेश करती है। अब आप 'समाधान' से लोहा लेने के लिए और दृढ़ता के साथ कार्यरत होंगे, हिंदूत्व ताकतों के अत्याचारों को रोकने के लिए चेतनाबद्ध तरीके से तैयार हो जाएंगे - यही हमारी पार्टी आशा करती है।

- ★ क्रांतिकारी, राष्ट्रीयमुक्ति और जनवादी आंदोलनों पर जारी राज्यहिंसा की भर्त्सना करें।
- ★ केन्द्र और राज्य सरकारों के साम्राज्यवाद-परस्त और जनविरोधी नीतियों का भण्डाफोड़ करें।
- ★ ताड़पाल, कसनूर और आयपेंटा के हत्याओं के पीछे के तथ्यों को उजागर कर हत्यारों को सजा दें।
- ★ तड़पाल, कसनूर और आयपेंटा शहीदों के स्मृति में सभा-संगोष्ट्रियों का आयोजन कर उनके बलिदानों को ऊंचा उठाएं। उनके अरमानों पूरा करने के लिए शपथ लें।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ,

अभय

अभय,

प्रवक्ता, केन्द्रीय कमेटी,

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)